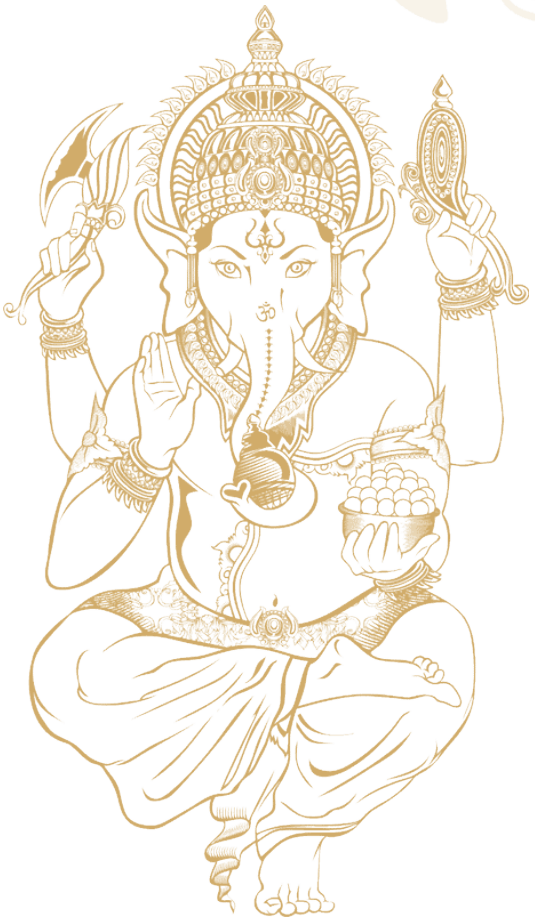

KM

23 Aug 2025

10:02 PM

Gurgaon

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119273801**

तिथि 23/08/2025 **समय** 22:02:00 **वार** शनिवार **स्थान** Gurgaon **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:59
अक्षांश 28:27:00 उत्तर **रेखांश** 77:01:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:56 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:48:57 घं
वेलान्तर	00:02:38 घं
सूर्योदय	05:55:38 घं
सूर्यास्त	18:52:51 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	1
नक्षत्र	मघा
योग	शिव
करण	किंस्तुघ्न

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मे-मेनका
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

केतु 0वर्ष 9मा 22दि

केतु	23/08/2025
	15/06/2026
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	23/08/2025
बुध	15/06/2026

योगिनी

भद्रिका 0वर्ष 6मा 28दि

भद्रिका	23/08/2025
	23/03/2026
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	23/08/2025
धान्या	01/09/2025
भ्रामरी	23/03/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			13:06:34	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	---	0:00			
सूर्य			06:35:09	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	मूलत्रिकोण	1.50	पुत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			11:47:23	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	मित्र राशि	1.52	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			16:20:12	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.29	भातृ	भातृ	क्षेम
बुध			18:55:41	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	केतु	शत्रु राशि	0.96	अमात्य	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			22:06:51	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.12	आत्मा	धन	वध
शुक्र			03:24:13	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	शत्रु राशि	1.10	कलत्र	कलत्र	मित्र
शनि		व	06:21:09	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.16	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु		व	24:06:00	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु		व	24:06:00	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

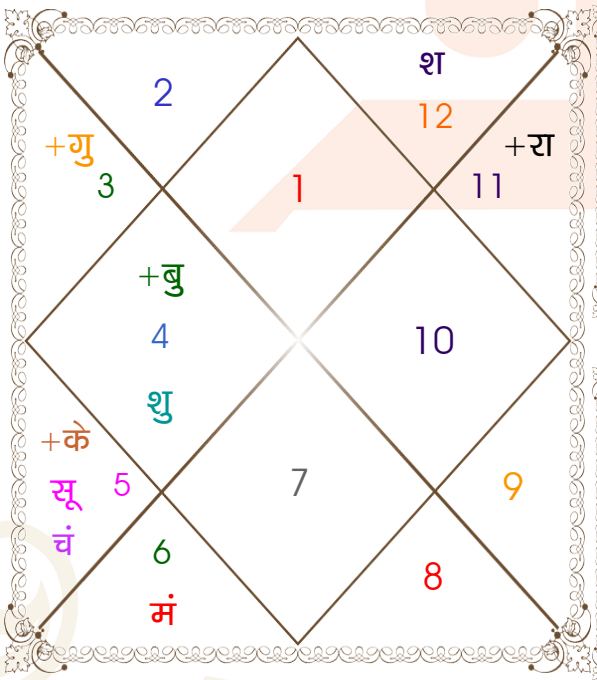

चन्द्र कुंडली

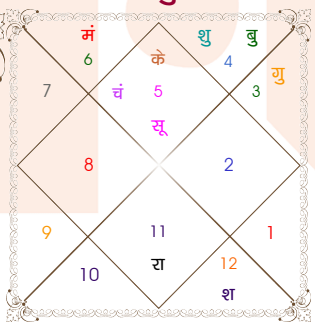

नवमांश कुंडली

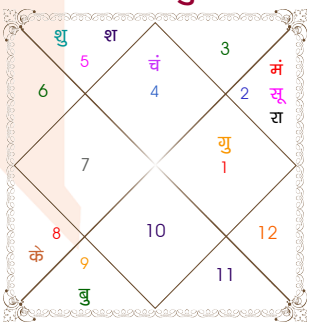

सर्वाष्टकवर्ग

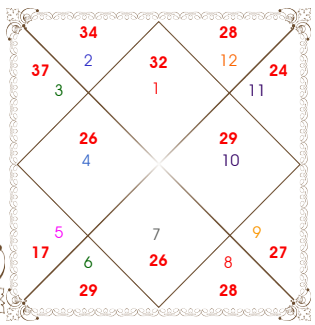

दशमांश कुंडली

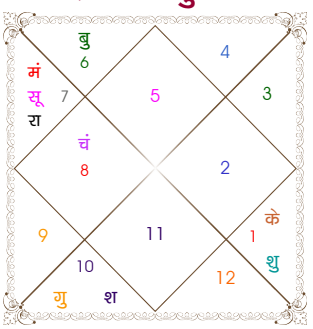

नक्षत्रफल

आप मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग मूषक, गण राक्षस, वर्ण क्षत्रिय तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "मे" से होगा। यथा मेनका ।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। यद्यपि चतुर्थचरण में उत्पन्न होने से इसका विशेष दोष नहीं होता फिर भी सावधानी वश इसकी शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए जन्म समय में इस नक्षत्र के 28 हजार जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। 27 दिन के बाद जब नक्षत्र की पुनरावृति हो उस दिन शास्त्रोक्त विधि विधान से जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करके शान्ति करनी चाहिए। इस प्रकार शान्ति करने से दोष समाप्त हो जाएगा तथा संबंधित जातक सुखपूर्वक जीवन यापन करेगा।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने जीवन में बहुत से सेवकों तथा नौकरों से युक्त रहेंगी तथा धन वैभव से भी सदा सुसम्पन्न रहेंगी इनका आपको अभाव नहीं रहेगा। समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों के उपभोग करने का सौभाग्य भी आप प्राप्त करेंगी। देवताओं तथा माता पिता के प्रति आपके मन में असीम सेवा भाव विद्यमान रहेगा तथा उद्योग के क्षेत्र में आप हमेशा तत्पर तथा व्यस्त रहेंगी।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

साहस से आप परिपूर्ण रहेंगी तथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने की आपके मन में तीव्र इच्छा जागृत रहेगी। इसी लगन के कारण आप सेना या पुलिस के किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगी। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप तत्पर रहेंगी।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

आप समय समय पर अपने स्वरूप को परिवतित करने में कुशल होंगी तथा उत्सवों के प्रति आप अत्यन्त ही आकर्षित तथा रूचि शील रहेंगी तथा स्वयं भी तन मन धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आप जनता के लिए कोई उच्चाधिकारिणी भी हो सकती हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपका हृदय कठोरता से युक्त रहेगा। आपका स्वभाव भी उग्र एवं तेजस्वी होगा। ज्ञानार्जन तथा विद्याध्ययन में आप पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। आपकी बुद्धि सत्कार्यों की ओर प्रेरित होगी तथा पापकर्मो की आप हमेशा उपेक्षा करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में सदैव प्रवीण एवं सफल रहेंगी। कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही पति वर्ग को अपने वश में करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा समाज में आपको यथोचित मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होती रहेगी।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यो को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विब्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

सिंह राशि में जन्म होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेज रहेगा। आपके कपोल तथा मुखमंडल विस्तृताकार के होंगे तथा आखें भी छोटी तथा पीतवर्ण से युक्त होंगी। पर्वतों एवं वनों में भ्रमण करना आपको प्रियकर लगेगा। आप अकारण ही शीघ्र कुपित होने वाली प्रवृति से भी युक्त रहेंगी। आप अपने जीवन में मानसिक चिन्ताओं से भी चिन्तित रहेंगी। दानशीलता की भावना भी आप में विद्यमान रहेगी तथा जीवन में समय समय पर इसका प्रदर्शन से भी नही चूकेंगी। अपने श्रेष्ठ संबंधियो तथा माता आदि के प्रति आपके मन में पूर्ण सेवा की भावना रहेगी तथा इस प्रवृति के पालन करने में आप सदा तत्पर रहेंगी। आपकी संतति संख्या में पुत्र अल्प मात्रा में रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी अतः चंचलता का आप में अभाव रहेगा। साथ ही समाज में भी आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्यां मजबूत रहेंगी तथा स्वभाव उग्रता से युक्त रहेगा। कार्यारम्भ से पूर्व आप अपने कंठ से अवश्य किसी भी ध्वनि को निस्सारित करेंगी। आपका वक्षप्रदेश विस्तृत तथा आकर्षित रहेगा तथा समाज के सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आप हमेशा सजग तथा चौकन्नी प्रवृति की होंगी। तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व चारों तरफ का निरीक्षण करेंगी तथा पूर्ण आश्वस्त होने पर ही कार्य का शुभारम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी मोटी तथा मुखाकृति विशाल होगी। आप माता की प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनके प्रति सेवा तथा श्रद्धा का भाव रखेंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

पेट भरने योग्य जीविकार्जन से आप शान्ति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपके स्वभाव में क्रोध की भी बहुलता रहेगी। साथ ही वन तथा पहाड़ों के भ्रमण में आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी। आप सेवक तथा बन्धुओ से भी युक्त रहेंगी।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।

कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में क्षमाशीलता नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी अतः किसी को दण्ड देने की अपेक्षा आप क्षमा करना उचित समझेंगी। आप कुछ न कुछ कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगी क्यों कि निष्क्रिय होकर बैठना आपकी प्रकृति के विरूद्ध होगा। साथ ही आप देश विदेशों में भ्रमण करने में व्यस्त रहेंगी तथा अपना अधिकांश समय यात्राओं में ही व्यतीत करेंगी। शीत से आप अत्याधिक मात्रा में भयभीत रहेंगी। आपका स्वभाव विनयशील होगा तथा आपके समस्त मित्र सन्मित्र एवं अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे। आप अपने समाज से पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करने में रत रहेंगी तथा आपका यश दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। साथ ही कुछ बुरी आदतें भी आपके स्वभाव में व्याप्त रहेंगी। परन्तु आपकी लोकप्रियता पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपके नेत्र सुन्दर तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त ही आकर्षित तथा मनोहर होगी। आप गम्भीर दृष्टि से युक्त रहेगी तथा अपने समस्त जीवन को सुख तथा आनन्द से व्यतीत करेंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में जन्म लेने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बातों को अधिक बोलने वाली होंगी। साथ ही दया एवं करूणा का प्रदर्शन आप अल्प मात्रा में ही करेंगी। साहस का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगी। साथ ही आप छोटी छोटी बातों पर भी शीघ्र क्रोधित होने वाली होंगी। अपनी कार्य सिद्धि के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी। अन्य लोगों से भी आपका विवाद भी होता रहेगा जिससे अधिकांश लोगों से आपका वैमनस्य का भाव रहेगा। अतः अन्य जनों से आपको संयमपूर्वक वार्तालाप करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह नामक रोग से भी पीड़ित हो सकती हैं। आपका स्वरूप भी सामान्य सुन्दर होगा। परन्तु आप कभी कभी अत्यन्त ही कठोर भाषा का प्रयोग करेंगी जिसे श्रोताओं को दुःखानुभूति होगी। अतः अपने सम्भाषण में आप मधुर शब्दों का यत्नपूर्वक उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त बुद्धिमती होंगी तथा हमेशा नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप अपने कार्यों को करने में अधिकांश व्यस्त रहेंगी तथा अन्य व्यर्थ की बातों पर ध्यान नहीं देंगी। आलस्य तथा गर्व की भावना का आप में सर्वथा अभाव रहेगा परन्तु अन्य जनों पर आपका विश्वास नहीं रहेगा। आप जो भी कार्य इनसे करवाना चाहेंगी उसे अपने ही समक्ष सम्पन्न करवाएंगी तभी आपको सन्तुष्टि होगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोऽप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अनिष्ट फलदायक हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याग दें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय खराब चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान अथवा अन्य शुभ कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना भी करनी चाहिए। साथ ही रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ रहेगा। यदि आप सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गुड़ गेहूं, रक्त पुष्प इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करेंगे तो आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही अन्यत्र लाभ अर्जित करने के लिए सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।